The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com

सतत पर्यटन विकास में ईको-टूरिज्म की भूमिका: पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय की सहभागिता एवं आर्थिक संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. अनिल कुमार तिवारी
सहायक प्रोफेसर, भूगोल विभाग, अतर्रा पीजी कॉलेज अतर्रा, बांदा
Email - anilkumartiwari76@gmail.com

सारांश

ईको-टूरिज्म को सामान्य प्रकृति-पर्यटन से अलग करने वाली विशेषता यह है कि उसका लक्ष्य केवल प्राकृतिक स्थलों की यात्रा नहीं, बल्कि पारिस्थितिक क्षति को सीमित करना, संरक्षण के लिए संसाधन उत्पन्न करना तथा स्थानीय निवासियों के जीवन में न्यायपूर्ण आर्थिक लाभ पहुँचाना है। प्रस्तुत अध्ययन 2021 तक प्रकाशित प्रामाणिक द्वितीयक सामग्री के आधार पर भारत में ईको-टूरिज्म की संभावनाओं और सीमाओं का विश्लेषण करता है। अध्ययन में भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण, पर्यटन मंत्रालय की सांख्यिकी, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम, विश्व पर्यटन संगठन और संरक्षित क्षेत्रों के प्रबंधन से संबंधित पूर्ववर्ती शोध को आधार बनाया गया है। वर्णनात्मक आँकड़े पर्यटन के व्यापक आकार और महामारी के प्रभाव को दर्शाते हैं; उन्हें ईको-टूरिज्म की अलग सांख्यिकीय गणना नहीं माना गया है। निष्कर्ष यह है कि स्थानीय समुदाय की निर्णयकारी भागीदारी, आगंतुक वहन क्षमता, पारदर्शी लाभ-साझेदारी, पर्यावरण शिक्षा और दीर्घकालिक निगरानी के बिना ईको-टूरिज्म का विस्तार टिकाऊ नहीं होगा। अध्ययन स्थानीय उद्यम, महिला स्वयं सहायता समूह, प्रशिक्षित प्रकृति-मार्गदर्शक, होमस्टे और स्थानीय उत्पादों की मूल्य-श्रृंखला के माध्यम से आजीविका बढ़ाने की संभावनाओं की पहचान करता है। साथ ही कचरा, जल दबाव, वन्यजीव व्यवधान, भूमि उपयोग परिवर्तन और सांस्कृतिक वस्तुकरण जैसी समस्याओं को रेखांकित करता है। अंततः संरक्षण, सामुदायिक अधिकार और आर्थिक व्यवहार्यता के बीच संतुलन स्थापित करने वाला संस्थागत ढाँचा प्रस्तावित किया गया है।

मुख्य शब्द: ईको-टूरिज्म, सतत पर्यटन, जैव-विविधता, सामुदायिक सहभागिता, स्थानीय आजीविका, वहन क्षमता, संरक्षण वित्त।

1. प्रस्तावना

पर्यटन आर्थिक गतिविधियों, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय विकास का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। लेकिन किसी पर्यटन स्थल की लोकप्रियता उसके पर्यावरणीय स्वास्थ्य का प्रमाण नहीं होती। पर्वतीय ढलानों पर अनियंत्रित निर्माण, वन क्षेत्रों में वाहनों का दबाव, जलस्रोतों का दोहन और प्लास्टिक अपशिष्ट ऐसी लागतें हैं जो कई बार पर्यटन की आय में दिखाई नहीं देतीं। इसी कारण पर्यटन की सफलता को केवल आगंतुक संख्या, होटल अधिभोग या टिकट आय से मापना अपर्याप्त है। सतत पर्यटन का विचार आर्थिक व्यवहार्यता को सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय सीमाओं के साथ जोड़ता है (UNEP & UNWTO, 2005)।

भारत में हिमालयी क्षेत्र, पश्चिमी घाट, पूर्वोत्तर, तटीय पारिस्थितिकियाँ, आर्द्रभूमियाँ और वन्यजीव संरक्षित क्षेत्र ईको-टूरिज्म की विविध संभावनाएँ प्रस्तुत करते हैं। इन क्षेत्रों में पारिस्थितिक संवेदनशीलता, सामाजिक संरचना और स्थानीय आजीविका की परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं। एक ही पर्यटन मॉडल सभी जगह लागू करने से लाभ असमान हो सकता है। उदाहरणतः किसी वन्यजीव क्षेत्र में वाहन प्रवेश का विनियमन केंद्रीय मुद्दा हो सकता है, जबकि ग्रामीण प्रकृति-पथ पर स्थानीय गाइडों के कौशल, स्वच्छता और छोटे व्यवसायों तक बाजार पहुँच की समस्या अधिक महत्त्वपूर्ण होगी।

ईको-टूरिज्म की चर्चा में अक्सर यह मान लिया जाता है कि प्राकृतिक दृश्य देखना स्वयं पर्यावरण संरक्षण है। व्यवहार में संरक्षण तब होता है जब पर्यटन से उत्पन्न राजस्व, व्यवहार और संस्थागत नियम प्रकृति को होने वाली क्षति घटाएँ। यदि पर्यटक जंगल देखने आएँ लेकिन कचरा बढ़े, स्थानीय निवासियों की भूमि तक पहुँच सीमित हो और लाभ बाहरी संचालकों को मिले, तो उसे टिकाऊ मॉडल कहना कठिन होगा। इस शोध का केंद्रीय तर्क यही है कि ईको-टूरिज्म एक प्रबंधन पद्धति है, केवल पर्यटन उत्पाद का आकर्षक नाम नहीं।

2. अवधारणात्मक आधार: सतत पर्यटन और ईको-टूरिज्म

सतत पर्यटन का दायरा व्यापक है। इसका उद्देश्य वर्तमान आगंतुकों और मेजबान समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संभावनाओं की रक्षा करना है। ईको-टूरिज्म इस व्यापक अवधारणा का प्रकृति-केंद्रित रूप है, जिसमें पर्यावरण व्याख्या, संरक्षण सहयोग, न्यूनतम प्रतिकूल प्रभाव और स्थानीय लाभ विशेष रूप से आवश्यक हैं। Ceballos-Lascuráin (1996) तथा Fennell (2008) ने प्राकृतिक परिवेश में उत्तरदायी यात्रा और संरक्षणात्मक अभिमुखता को महत्त्व दिया। Honey (2008) के अनुसार ईको-टूरिज्म के दावे की जाँच उसके वास्तविक संचालन से होनी चाहिए। स्थानीय लोगों को रोजगार देना उपयोगी है, परंतु निम्न वेतन और निर्णय प्रक्रिया से बहिष्कार के साथ मिलने वाला सीमित रोजगार पर्याप्त सामुदायिक सहभागिता नहीं है। इसी प्रकार पर्यावरण शुल्क वसूलना तभी सार्थक है जब शुल्क का उपयोग स्पष्ट हो और संरक्षण परिणामों का लेखा प्रस्तुत किया जाए।

पर्यटन का पर्यावरणीय पदचिह्न परिवहन, ऊर्जा, पानी, भोजन, निर्माण और अपशिष्ट के विभिन्न चरणों में बनता है। किसी गंतव्य पर कम भीड़ होने का अर्थ आवश्यक रूप से कम कार्बन उत्सर्जन नहीं है; लंबी दूरी की यात्रा कुल उत्सर्जन बढ़ा सकती है। इसलिए स्थानीय स्तर की वहन क्षमता के साथ यात्रा-श्रृंखला की व्यापक पर्यावरणीय लागत भी ध्यान में रखनी चाहिए।

3. साहित्य समीक्षा

Boo (1990) ने ईको-टूरिज्म की संरक्षण-संबंधी संभावनाओं और योजनागत जोखिमों पर आरंभिक व्यवस्थित विमर्श प्रस्तुत किया। Lindberg और Hawkins (1993) ने योजनाकारों के लिए प्रकृति पर्यटन को नियंत्रित करने तथा स्थानीय हितों को जोड़ने वाले अनुभवों का संकलन किया। Weaver (2001) ने ईको-टूरिज्म के विभिन्न रूपों और उनके संस्थागत संदर्भों को स्पष्ट किया। इन अध्ययनों का साझा संदेश है कि पर्यटन का स्वरूप उसके प्रबंधन और लाभ वितरण से निर्धारित होता है।

Scheyvens (1999) ने स्थानीय समुदाय के आर्थिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और राजनीतिक सशक्तीकरण को ईको-टूरिज्म के मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण आधार बताया। यह दृष्टिकोण पर्यटन रोजगार की मात्र संख्या से आगे जाता है। उदाहरण के लिए महिला समूह यदि भोजन सेवा चलाते हैं लेकिन मूल्य निर्धारण और अनुबंध पर उनका नियंत्रण नहीं है, तो आर्थिक सहभागिता के बावजूद सशक्तीकरण सीमित रह सकता है।

UNEP (2002) और Eagles, McCool तथा Haynes (2002) ने संरक्षण क्षेत्र प्रबंधन, आगंतुक नियंत्रण और स्थानीय हितधारकों की भागीदारी पर बल दिया। UNEP और UNWTO (2005) ने सतत पर्यटन के आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय उद्देश्यों को नीति-निर्माण में समेकित करने की रूपरेखा दी। Goodwin (2011) ने जिम्मेदार पर्यटन को ऐसे व्यवहारों से जोड़ा जो स्थान विशेष की समस्याओं के समाधान में योगदान दें।

भारतीय संदर्भ में पर्यावरणीय नियमों, वन्यजीव संरक्षण, स्थानीय स्वशासन और ग्रामीण आजीविका के बीच समन्वय की आवश्यकता विशेष रूप से दिखाई देती है। केवल गंतव्य विपणन या पर्यटन सुविधा निर्माण पर केंद्रित योजनाएँ संरक्षण और लाभ वितरण के प्रश्नों का समाधान नहीं करतीं। इसी पृष्ठभूमि में वर्तमान अध्ययन ईको-टूरिज्म को आर्थिक संभावना के साथ एक सार्वजनिक नीति और स्थानीय शासन के प्रश्न के रूप में देखता है।

4. शोध समस्या, उद्देश्य एवं प्रश्न

शोध समस्या यह है कि पर्यटन के विस्तार को प्रायः आर्थिक उपलब्धि के रूप में दर्ज किया जाता है, जबकि संरक्षण की वास्तविक स्थिति, स्थानीय नियंत्रण, आय का वितरण और पर्यावरणीय लागतों की तुलनीय जानकारी कम उपलब्ध होती है। व्यापक पर्यटन आँकड़ों से सीधे ईको-टूरिज्म की आर्थिक हिस्सेदारी निकालना सांख्यिकीय रूप से अनुचित होगा। अतः अध्ययन का उद्देश्य उपलब्ध प्रामाणिक सामग्री से संभावनाओं और जोखिमों की संतुलित व्याख्या करना है।

अध्ययन के उद्देश्य हैं: (1) ईको-टूरिज्म और सतत पर्यटन के वैचारिक संबंध को स्पष्ट करना; (2) भारत में पर्यटन के व्यापक रुझानों की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करना; (3) जैव-विविधता, जल, अपशिष्ट और वन्यजीव संरक्षण पर संभावित प्रभावों का विश्लेषण करना; (4) स्थानीय समुदाय, महिलाओं और छोटे उद्यमों की भूमिका का परीक्षण करना; तथा (5) न्यायपूर्ण और पर्यावरण-सम्मत विकास के लिए नीतिगत उपाय सुझाना।

प्रमुख प्रश्न हैं: पर्यटन से प्राप्त आय संरक्षण को कैसे समर्थन दे सकती है? स्थानीय समुदाय की भागीदारी को केवल रोजगार से अलग कैसे पहचाना जाए? किस परिस्थिति में आगंतुकों की संख्या बढ़ाना पर्यावरणीय दृष्टि से अनुचित हो सकता है? और पर्यावरणीय लाभों तथा स्थानीय आर्थिक परिणामों को एक साथ किन संकेतकों से मापा जाना चाहिए?

5. शोध पद्धति एवं डेटा की सीमाएँ

अध्ययन गुणात्मक समीक्षात्मक पद्धति तथा चयनित आधिकारिक आँकड़ों के वर्णनात्मक विश्लेषण पर आधारित है। स्रोतों में भारत सरकार का आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21, पर्यटन सांख्यिकी 2021, संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम और विश्व पर्यटन संगठन की 2021 तक प्रकाशित सामग्री तथा ईको-टूरिज्म संबंधी अकादमिक पुस्तकें और शोध आलेख शामिल हैं। किसी प्राथमिक सर्वेक्षण, क्षेत्रीय साक्षात्कार या कारणात्मक प्रतिगमन विश्लेषण का दावा नहीं किया गया है।

सभी सांख्यिकीय सारणियों में मापन की इकाई, समयावधि और स्रोत अलग से दिए गए हैं। भारत के विदेशी पर्यटक आगमन और वैश्विक अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन के आँकड़े समग्र पर्यटन से संबंधित हैं; इन्हें ईको-टूरिज्म आगमन के समान नहीं माना गया है। पर्यावरणीय प्रभावों के संदर्भ में साहित्य-आधारित तर्क प्रस्तुत किए गए हैं, लेकिन काल्पनिक प्रतिशत, आय, रोजगार या जैव-विविधता सूचकांक नहीं गढ़े गए हैं।

समय सीमा 2021 है। इसलिए 2022 या बाद में प्रकाशित किसी नीति, राष्ट्रीय रणनीति, पर्यटक संख्या या शोध परिणाम को इस लेख का साक्ष्य नहीं बनाया गया है। कुछ 2021 में प्रकाशित संकलनों में 2020 तक के आँकड़े हैं; ऐसे मामलों में प्रकाशन वर्ष और डेटा वर्ष के अंतर को स्पष्ट रखा गया है।

6. भारत में पर्यटन का सांख्यिकीय परिप्रेक्ष्य

आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21 में उपलब्ध श्रृंखला के अनुसार भारत में विदेशी पर्यटक आगमन 2016 में 8.80 मिलियन से बढ़कर 2019 में 10.93 मिलियन हुआ। 2020 में कोविड-19 संबंधी प्रतिबंधों और स्वास्थ्य संकट के कारण यह घटकर 2.74 मिलियन रह गया। यह गिरावट पर्यटन आधारित स्थानीय आजीविका की बाहरी झटकों के प्रति संवेदनशीलता दिखाती है।

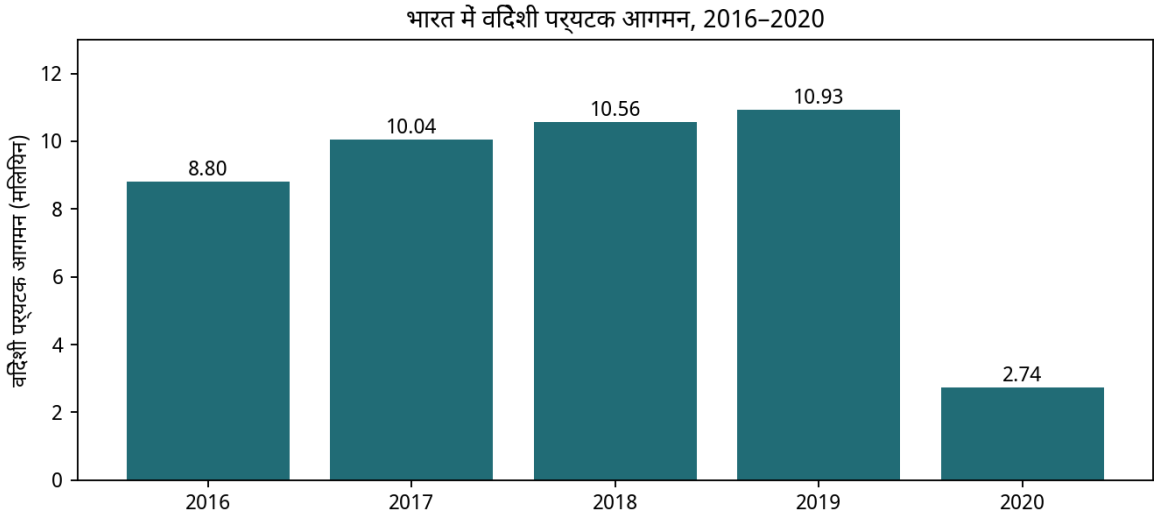
पर्यटन के इन समग्र आँकड़ों से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि कितने पर्यटक ईको-टूरिज्म गतिविधियों में शामिल थे या संरक्षण क्षेत्रों को कितना प्रत्यक्ष राजस्व मिला। फिर भी ये आँकड़े पर्यटन क्षेत्र के पैमाने और अस्थिरता को समझने की पृष्ठभूमि देते हैं। विशेष रूप से स्थानीय पर्यटन उद्यमों के लिए आय के स्रोतों का विविधीकरण और संकट के समय सुरक्षा तंत्र आवश्यक हो जाता है।

तालिका 1. भारत में विदेशी पर्यटक आगमन, 2016–2020

वर्ष	विदेशी पर्यटक आगमन (मिलियन)
2016	8.80
2017	10.04
2018	10.56

2019	10.93
2020	2.74

स्रोत: भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21; पर्यटन मंत्रालय, India Tourism Statistics 2021। यह समग्र पर्यटन है, ईको-टूरिज्म का पृथक आँकड़ा नहीं।



चित्र 1. भारत में विदेशी पर्यटक आगमन; मूल सरकारी आँकड़ों से लेखक द्वारा तैयार।

7. वैश्विक संकट और सतत पर्यटन की आवश्यकता

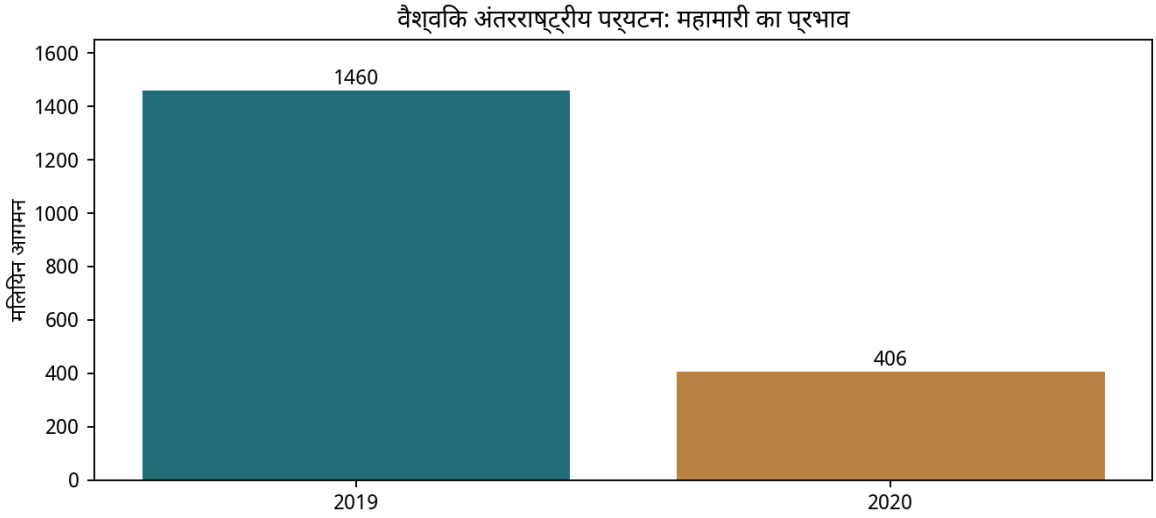
विश्व पर्यटन संगठन की 2021 तक उपलब्ध रिपोर्टों में 2019 के लगभग 1.46 अरब अंतरराष्ट्रीय पर्यटक आगमन के मुकाबले 2020 में लगभग 40 करोड़ आगमन का अनुमान सामने आया। महामारी ने यह स्पष्ट किया कि अत्यधिक पर्यटन निर्भरता वाले स्थानों पर आजीविका का जोखिम एक ही क्षेत्र में केंद्रित हो सकता है। संरक्षण के लिए पर्यटन शुल्क पर निर्भर संरक्षित क्षेत्रों में भी राजस्व अस्थिरता का प्रश्न उभरता है।

यह संकट ईको-टूरिज्म को स्वतः पर्यावरण के लिए बेहतर सिद्ध नहीं करता। यात्रा घटने से कुछ स्थानों पर मानवीय दबाव कम हुआ होगा, पर पर्यटन आय घटने से संरक्षण कार्यों और स्थानीय उद्यमों को वित्तीय कठिनाई भी हो सकती है। इसलिए संकट-सहनशील मॉडल में स्थानीय कृषि, हस्तशिल्प, सेवाएँ और संरक्षण संबंधी कार्यों के बीच आर्थिक विविधता उपयोगी है।

तालिका 2. वैश्विक पर्यटन में महामारी का व्यवधान

वर्ष	**वैश्विक अंतरराष्ट्रीय आगमन (मिलियन)**	**व्याख्या**
2019	लगभग 1,460	महामारी पूर्व आधार
2020	लगभग 406	यात्रा प्रतिबंधों से तीव्र गिरावट

स्रोत: UNWTO (2021), उपलब्ध अनुमानों के गोल किए गए आँकड़े; अलग प्रकाशनों में संशोधन के कारण मामूली अंतर संभव।



चित्र 2. वैश्विक पर्यटन में 2019–2020 का अंतर; UNWTO (2021) के आँकड़ों पर आधारित।

8. पर्यावरण संरक्षण में ईको-टूरिज्म की भूमिका

ईको-टूरिज्म संरक्षण का साधन तब बन सकता है जब आगंतुकों के भुगतान का एक पूर्वनिर्धारित हिस्सा आवास संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन, जैव-विविधता निगरानी और पर्यावरण शिक्षा में लगाया जाए। शुल्क व्यवस्था का प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि संग्रह कितना पारदर्शी है और निर्णय किसके हाथ में हैं। शुल्क बढ़ाना मात्र पर्याप्त नहीं; संरक्षण गतिविधियों के लक्ष्य, लागत और परिणाम सार्वजनिक होने चाहिए।

वन्यजीव क्षेत्रों में वाहनों का शोर, प्रकाश, सड़क किनारे भोजन, अनियमित मार्ग और अत्यधिक निकटता जीवों के व्यवहार को प्रभावित कर सकते हैं। कुछ प्रजातियाँ मानव उपस्थिति से अधिक संवेदनशील होती हैं। इसलिए सार्वभौमिक संख्या निर्धारित करने के बजाय स्थल-विशेष अध्ययन, मौसमी प्रतिबंध और निगरानी की आवश्यकता होती है। वन्यजीव देखने की सफलता को किसी जीव के अत्यंत पास पहुँचने से नहीं मापना चाहिए।

जल और अपशिष्ट का प्रश्न भी केंद्रीय है। पर्वतीय पर्यटन स्थलों पर पेयजल की मौसमी कमी तथा सीवेज निस्तारण की सीमित क्षमता पर्यटक संख्या बढ़ने पर गंभीर हो सकती है। छोटे होमस्टे भी यदि उचित जल और कचरा व्यवस्था के बिना चलें तो सामूहिक दबाव पैदा कर सकते हैं। प्लास्टिक कम करना, पुनर्भरण, स्थानीय खरीद और अपशिष्ट पृथक्करण तभी टिकाऊ होंगे जब उनका नियमित अनुपालन हो।

प्राकृतिक क्षेत्रों में निर्माण की अनुमति से पहले ढलान, जल निकासी, वन आवरण, स्थानीय आवागमन और आपदा जोखिम का अध्ययन आवश्यक है। सड़क, पार्किंग और आवास सुविधाएँ पर्यटन आय बढ़ा सकती हैं, पर वे आवास विखंडन और भूक्षरण का कारण भी बन सकती हैं। अतः संरक्षण-केंद्रित विकास में 'पहले अवसंरचना, बाद में पर्यावरणीय सुधार' की पद्धति उपयुक्त नहीं है।

9. स्थानीय समुदाय की सहभागिता और अधिकार

स्थानीय समुदाय केवल सेवा प्रदाता नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों का ऐतिहासिक उपयोग करने वाला हितधारक है। सहभागिता के कम से कम तीन स्तर अलग करने चाहिए: सूचना और परामर्श; संचालन में भागीदारी; तथा नियम, राजस्व और भूमि उपयोग संबंधी निर्णयों में वास्तविक अधिकार। किसी बैठक में उपस्थिति को निर्णयकारी भागीदारी मान लेना पर्याप्त नहीं है।

समुदाय आधारित पर्यटन में स्थानीय गाइड, आवास संचालक, परिवहनकर्ता, खाद्य उत्पादक, हस्तशिल्पकार और सांस्कृतिक प्रस्तोता आय प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन यदि विपणन, ऑनलाइन बुकिंग और बड़े अनुबंध बाहरी कंपनियों के नियंत्रण में रहें तो स्थानीय आय का हिस्सा सीमित रह सकता है। इसलिए स्थानीय आपूर्ति-श्रृंखला, पारदर्शी अनुबंध और कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आर्थिक रिसाव घटाना महत्त्वपूर्ण है।

महिला सहभागिता का मूल्यांकन केवल प्रशिक्षण या रोजगार की संख्या से नहीं होना चाहिए। आय पर नियंत्रण, सुरक्षित कार्यस्थल, समय उपयोग, निर्णय में प्रतिनिधित्व और संपत्ति पर अधिकार भी आवश्यक हैं। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से भोजन, स्वच्छता, प्रकृति-मार्गदर्शन, स्थानीय उत्पाद और होमस्टे संचालन में अवसर हो सकते हैं; लेकिन महिलाओं पर अवैतनिक देखभाल और अतिथि-सत्कार का अतिरिक्त बोझ न पड़े, यह भी देखना होगा।

सांस्कृतिक विरासत को पर्यटन उत्पाद बनाते समय समुदाय की सहमति और गरिमा महत्त्वपूर्ण है। धार्मिक अनुष्ठान, स्थानीय ज्ञान और पारंपरिक जीवन पद्धतियाँ केवल पर्यटक प्रदर्शन की वस्तु नहीं हैं। समुदाय को यह तय करने का अधिकार होना चाहिए कि क्या साझा किया जाए, किस शर्त पर किया जाए और उससे प्राप्त आय का उपयोग कैसे हो।

10. आर्थिक संभावनाएँ और स्थानीय मूल्य-श्रृंखला

ईको-टूरिज्म की आर्थिक संभावना केवल टिकट बिक्री में नहीं है। स्थानीय परिवहन, भोजन, ठहराव, प्रशिक्षित मार्गदर्शन, वन-आधारित वैध उत्पाद, कृषि अनुभव, हस्तशिल्प और संरक्षण शिक्षा के माध्यम से अनेक छोटे उद्यम विकसित हो सकते हैं। आर्थिक गुणक प्रभाव तभी स्थानीय रहता है जब सामान और सेवाओं की खरीद स्थानीय स्तर पर हो और श्रमिकों को पर्याप्त भुगतान मिले।

मौसमी पर्यटक मांग के कारण उद्यमों की नकदी आय असमान हो सकती है। पर्यटक मौसम में उच्च कमाई के बावजूद वर्ष के अन्य महीनों में रोजगार घट सकता है। इसलिए कृषि, स्थानीय प्रसंस्करण, डिजिटल विपणन और प्रशिक्षण से जुड़े पूरक अवसर महत्त्वपूर्ण हैं। स्थानीय उद्यमों के लिए छोटे ऋण, बीमा, गुणवत्ता मानक और बाजार सूचना के अभाव को भी संबोधित करना चाहिए।

प्रकृति-पर्यटन का आर्थिक लाभ सार्वजनिक सेवाओं की लागत से अलग नहीं देखा जा सकता। अतिरिक्त पर्यटक स्वच्छता, सड़क रखरखाव, जल आपूर्ति और आपदा प्रतिक्रिया पर दबाव बढ़ाते हैं। इसलिए शुद्ध स्थानीय लाभ के आकलन में राजस्व से इन लागतों को घटाना चाहिए। केवल कुल पर्यटक खर्च को स्थानीय समृद्धि का संकेतक मानना भ्रामक होगा।

तालिका 3. ईको-टूरिज्म के आर्थिक अवसर और प्रबंधन संबंधी शर्तें

आर्थिक अवसर	संभावित स्थानीय लाभ	प्रमुख सावधानी
होमस्टे व स्थानीय भोजन	परिवार आय, स्थानीय खरीद	जल, अपशिष्ट और गुणवत्ता मानक
प्रकृति मार्गदर्शक	युवा कौशल एवं रोजगार	प्रशिक्षण, सुरक्षा, उचित पारिश्रमिक
हस्तशिल्प व कृषि उत्पाद	स्थानीय मूल्य संवर्धन	न्यायसंगत मूल्य, नकली उत्पाद से बचाव
संरक्षण शुल्क	स्थल प्रबंधन के संसाधन	पारदर्शी लेखा व पुनर्निवेश
परिवहन व भ्रमण	सेवा क्षेत्र के अवसर	उत्सर्जन, यातायात व वहन क्षमता

स्रोत: UNEP & UNWTO (2005), Goodwin (2011), Scheyvens (1999) के आधार पर लेखक का गुणात्मक संकलन; यह सांख्यिकीय सर्वेक्षण नहीं है।

11. वहन क्षमता और गंतव्य प्रबंधन

वहन क्षमता का आशय किसी स्थल पर ऐसी पर्यटन गतिविधि की सीमा से है जिसके आगे पर्यावरणीय क्षति, स्थानीय जीवन में व्यवधान या आगंतुक अनुभव की गिरावट अस्वीकार्य होने लगे। इसे एक स्थिर और सार्वभौमिक संख्या मानना उचित नहीं है। मौसम, वर्षा, प्रजातियों के प्रजनन काल, मार्ग की चौड़ाई, जल उपलब्धता और प्रबंधन क्षमता के अनुसार उपयुक्त सीमा बदल सकती है।

व्यावहारिक प्रबंधन में प्रवेश स्लॉट, मार्ग निर्धारण, वाहन सीमा, पूर्व बुकिंग, पर्यावरणीय मार्गदर्शन और उल्लंघन पर दंड शामिल हो सकते हैं। लेकिन सीमा तय करने की प्रक्रिया में स्थानीय समुदाय तथा वैज्ञानिक विशेषज्ञों की भागीदारी आवश्यक है। अन्यथा संरक्षण के नाम पर स्थानीय आजीविका पर एकतरफा प्रतिबंध लग सकते हैं, जबकि बाहरी व्यावसायिक हितों को छूट मिल सकती है।

गंतव्य की निगरानी के लिए कुछ मापनीय संकेतक उपयोगी हैं: प्रति आगंतुक कचरा, जल खपत, वन्यजीव व्यवधान की घटनाएँ, स्थानीय आपूर्तिकर्ताओं से खरीद का अनुपात, स्थानीय महिलाओं का निर्णयकारी प्रतिनिधित्व, संरक्षण पर वास्तविक व्यय और निवासियों की संतुष्टि। इन संकेतकों की आधाररेखा के बिना पर्यटन विस्तार के दावों का परीक्षण कठिन है।

12. ईको-टूरिज्म के जोखिम और आलोचनात्मक पक्ष

ईको-टूरिज्म शब्द का व्यावसायिक दुरुपयोग एक प्रमुख समस्या है। प्राकृतिक दृश्य वाला कोई भी रिसॉर्ट पर्यावरण-सम्मत नहीं हो जाता। ऊर्जा-गहन सुविधाएँ, बड़े जल उपभोग, अनियंत्रित निर्माण और लंबी वाहन यात्राएँ प्राकृतिक परिवेश में भी उच्च पर्यावरणीय लागत पैदा कर सकती हैं। इसलिए प्रमाणन का आधार विज्ञापन नहीं, स्वतंत्र रूप से जाँचे जा सकने वाले मानक होने चाहिए।

दूसरा जोखिम लाभ का असमान वितरण है। यदि समुदाय को केवल कम पारिश्रमिक वाला श्रम मिले और भूमि, अनुबंध तथा विपणन पर उसका नियंत्रण न हो, तो आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। भूमि की कीमतों में वृद्धि से स्थानीय परिवारों के लिए आवास महँगा हो सकता है। पर्यटन से जुड़ी नई आय के साथ पुराने संसाधन अधिकारों की सुरक्षा भी आवश्यक है।

तीसरा जोखिम पर्यटन पर अत्यधिक निर्भरता है। महामारी ने दिखाया कि अचानक मांग घटने पर छोटे उद्यमों के पास पर्याप्त बचत या सुरक्षा नहीं हो सकती। विविध आजीविका, सामाजिक सुरक्षा, प्रशिक्षण और आपदा तैयारी को ईको-टूरिज्म नीति का हिस्सा बनाना चाहिए।

चौथा जोखिम संरक्षण और आजीविका के बीच कृत्रिम विरोध खड़ा करना है। स्थानीय लोगों की पारंपरिक गतिविधियों पर कठोर रोक लगाकर पर्यटक गतिविधियों को बढ़ावा देना न्यायसंगत नहीं होगा। संरक्षण उपायों की वैधता और प्रभावशीलता दोनों के लिए स्थानीय ज्ञान, अधिकार तथा सहमति का सम्मान आवश्यक है।

13. एक समेकित संस्थागत रूपरेखा

प्रस्तावित रूपरेखा पाँच परस्पर संबंधित चरणों पर आधारित है। पहले स्थल की पारिस्थितिक संवेदनशीलता, संसाधन उपयोग और सामाजिक परिस्थितियों का आकलन किया जाए। दूसरे, स्थानीय समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ नियम और लाभ-साझेदारी तय की जाए। तीसरे, वहन क्षमता के अनुरूप नियंत्रित पर्यटन गतिविधि संचालित हो। चौथे, स्थानीय खरीद और रोजगार से आर्थिक लाभ वितरित किया जाए। पाँचवें, पर्यावरणीय तथा सामाजिक संकेतकों की नियमित निगरानी से निर्णयों में सुधार किया जाए।

यह प्रवाहचित्र एक विश्लेषणात्मक प्रस्ताव है, परीक्षण किया गया कारणात्मक मॉडल नहीं। वास्तविक गंतव्य में चरण कई बार समानांतर चलते हैं और बाहरी बाजार, मौसम तथा नीतिगत परिवर्तन भी परिणामों को प्रभावित करते हैं। फिर भी यह रूपरेखा पर्यटन विकास को केवल आगंतुक वृद्धि की प्रक्रिया मानने के बजाय उत्तरदायी स्थानीय शासन के रूप में देखने में सहायता करती है।



चित्र 3. संरक्षण और स्थानीय लाभ को जोड़ने वाली प्रस्तावित प्रबंधन रूपरेखा; लेखक द्वारा निर्मित।

14. नीतिगत सुझाव

प्रथम, प्रत्येक संवेदनशील गंतव्य के लिए स्थानीय पर्यावरणीय आधाररेखा और आगंतुक प्रबंधन योजना तैयार की जानी चाहिए। इनमें जल, कचरा, यातायात, प्रजाति-संवेदनशीलता और आपदा जोखिम के संकेतक हों। निर्धारित सीमा की समीक्षा वास्तविक निगरानी के आधार पर की जाए, न कि केवल पर्यटन कारोबार के दबाव में।

द्वितीय, पर्यटन से प्राप्त सार्वजनिक राजस्व के उपयोग का स्पष्ट नियम बनाया जाए। संरक्षण, कचरा प्रबंधन, स्थानीय बुनियादी सेवाओं और सामुदायिक प्रशिक्षण के लिए धन का अनुपात पारदर्शी हो। ग्राम-स्तरीय संस्थाओं और स्थानीय प्रतिनिधियों को आय-व्यय की जानकारी सुलभ कराई जाए।

तृतीय, स्थानीय युवाओं और महिलाओं के लिए मान्यता प्राप्त प्रकृति-मार्गदर्शन, प्राथमिक उपचार, डिजिटल विपणन, अतिथि प्रबंधन और पर्यावरण शिक्षा के व्यावहारिक प्रशिक्षण विकसित हों। प्रशिक्षण की सफलता प्रमाणपत्र संख्या के बजाय वास्तविक आय, सुरक्षित रोजगार और सेवा गुणवत्ता से मापी जाए।

चतुर्थ, छोटे होमस्टे और स्थानीय उद्यमों को तकनीकी परामर्श, सुलभ वित्त तथा पर्यावरण-अनुकूल मानकों को पूरा करने में सहायता दी जाए। बड़े निवेशकों और छोटे उद्यमियों के लिए समान नियम लागू हों, लेकिन अनुपालन सहायता स्थानीय क्षमता के अनुसार उपलब्ध हो।

पंचम, पर्यटन के सामाजिक प्रभावों का स्वतंत्र आकलन आवश्यक है। स्थानीय संतुष्टि, संसाधन तक पहुँच, महिला प्रतिनिधित्व, भूमि उपयोग और सांस्कृतिक सम्मान के संकेतक नियमित रूप से संकलित हों। शिकायत निवारण की प्रक्रिया स्पष्ट और स्थानीय भाषा में उपलब्ध हो।

षष्ठ, संरक्षण क्षेत्रों में पर्यटन विपणन से पहले स्थल की क्षमता, जोखिम और समुदाय की सहमति की पुष्टि हो। अत्यधिक लोकप्रिय स्थलों पर मांग प्रबंधन तथा वैकल्पिक क्षेत्रों में भी संवेदनशील योजना की आवश्यकता है; भीड़ को केवल दूसरे नाजुक क्षेत्र में स्थानांतरित करना समाधान नहीं है।

15. चर्चा

साहित्य और उपलब्ध सरकारी आँकड़े एक साथ रखने पर स्पष्ट होता है कि पर्यटन की आर्थिक महत्ता और ईको-टूरिज्म की संरक्षण क्षमता अलग-अलग विश्लेषणात्मक प्रश्न हैं। भारत में 2016–2019 के दौरान विदेशी पर्यटक आगमन की वृद्धि समग्र पर्यटन के विस्तार का संकेत देती है, लेकिन उससे पर्यावरणीय सुधार या स्थानीय लाभ वितरण सिद्ध नहीं होता। इसी प्रकार महामारी के दौरान पर्यटन में गिरावट ने आय निर्भरता की समस्या उजागर की, पर उससे संरक्षण परिणामों का स्वतः निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता।

ईको-टूरिज्म का मूल्यांकन बहुआयामी होना चाहिए। पर्यावरणीय आयाम में पारिस्थितिक स्थिति, जल, अपशिष्ट और जैव-विविधता; सामाजिक आयाम में स्थानीय अधिकार, प्रतिनिधित्व और सांस्कृतिक गरिमा; तथा आर्थिक आयाम में आय की स्थिरता, स्थानीय खरीद, गुणवत्तापूर्ण रोजगार और संरक्षण के लिए वित्त शामिल हों। केवल किसी एक आयाम में सफलता पर्याप्त नहीं है।

समीक्षा से यह भी स्पष्ट होता है कि स्थानीय समुदाय की भागीदारी को एक औपचारिक प्रक्रिया समझना गलत होगा। वास्तविक भागीदारी में संसाधनों के उपयोग, पर्यटन नियमों और आय-वितरण के निर्णयों पर प्रभाव शामिल है। यह अधिकार जितना स्पष्ट होगा, संरक्षण नियमों के प्रति स्थानीय विश्वास और जवाबदेही विकसित होने की संभावना उतनी अधिक होगी।

15.1. भविष्य के शोध के लिए मापन रूपरेखा

स्थल-विशेष अध्ययन में तीन प्रकार के आँकड़े एक साथ संकलित किए जाने चाहिए। पहले, आगंतुकों की संख्या, रहने की अवधि, स्थानीय खरीद और परिवहन के माध्यम को मापा जाए। दूसरे, पर्यावरणीय आधाररेखा में जल गुणवत्ता, अपशिष्ट की मात्रा, वनस्पति आवरण, वन्यजीवों के व्यवहार और संवेदनशील क्षेत्रों पर दबाव को शामिल किया जाए। तीसरे, स्थानीय परिवारों की आय, रोजगार के

दिनों, महिला नेतृत्व, निर्णय प्रक्रिया और सार्वजनिक सुविधाओं के प्रति संतुष्टि का आकलन किया जाए। इन सूचकों को एक-दूसरे के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि पूरक जानकारी के रूप में पढ़ना चाहिए।

ऐसे अध्ययन में पर्यटक और स्थानीय निवासी के दृष्टिकोण को अलग-अलग दर्ज करना आवश्यक होगा। पर्यटक का संतोष बढ़ने पर भी स्थानीय जल संकट या यातायात समस्या गंभीर हो सकती है। इसी प्रकार किसी समुदाय में पर्यटन से औसत आय बढ़ने पर भी लाभ केवल कुछ परिवारों तक सीमित रह सकता है। इसलिए औसत के साथ वितरण और असमानता का अध्ययन उपयोगी होगा। अनुसंधान की विश्वसनीयता के लिए नमूना चयन, प्रश्नावली, मौसम और मापन की अवधि का स्पष्ट विवरण देना चाहिए।

जहाँ संभव हो, पर्यटन आरंभ होने से पहले और बाद के संकेतकों की तुलना की जाए। केवल दो समय बिंदुओं की तुलना से भी कारणात्मक निष्कर्ष नहीं निकलता, क्योंकि वर्षा, बाजार, सड़क निर्माण और सरकारी नीतियाँ समान अवधि में बदल सकती हैं। उपयुक्त तुलनात्मक गंतव्य, लंबे समय की निगरानी और गुणात्मक साक्षात्कार से निष्कर्ष अधिक विश्वसनीय बन सकते हैं। इस प्रकार भविष्य के शोध का उद्देश्य पर्यटन की प्रशंसा या आलोचना भर नहीं, बल्कि किन शर्तों पर संरक्षण और आजीविका दोनों बेहतर होते हैं, इसकी परीक्षण योग्य समझ विकसित करना होना चाहिए।

16. निष्कर्ष

सतत पर्यटन विकास में ईको-टूरिज्म की भूमिका महत्त्वपूर्ण किंतु शर्तों पर निर्भर है। प्रकृति-आधारित यात्रा से संरक्षण वित्त, पर्यावरण शिक्षा और स्थानीय उद्यमिता के अवसर उत्पन्न हो सकते हैं; साथ ही अनियंत्रित पर्यटन से संसाधनों पर दबाव, जैव-विविधता क्षति और आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। इसलिए ईको-टूरिज्म को स्वतः सतत मानने के बजाय उसके परिणामों का प्रमाण-आधारित मूल्यांकन आवश्यक है।

अध्ययन का प्रमुख निष्कर्ष है कि पर्यावरण संरक्षण, सामुदायिक अधिकार और स्थानीय आर्थिक लाभ परस्पर विरोधी लक्ष्य नहीं हैं, बशर्ते प्रबंधन में पारदर्शिता, वैज्ञानिक निगरानी और न्यायपूर्ण भागीदारी हो। गंतव्य की वहन क्षमता का सम्मान, स्थानीय आपूर्ति-श्रृंखला का विस्तार, महिलाओं और युवाओं की निर्णयकारी भूमिका तथा संरक्षण शुल्क का उत्तरदायी उपयोग इस दिशा के आधार बन सकते हैं।

भविष्य के अनुभवजन्य शोध में विशिष्ट गंतव्यों पर पर्यटक व्यय, स्थानीय आय प्रतिधारण, रोजगार की अवधि, वन्यजीव व्यवधान, जल उपयोग और समुदाय की संतुष्टि का संयुक्त अध्ययन किया जाना चाहिए। वर्तमान लेख 2021 तक के द्वितीयक स्रोतों पर आधारित व्याख्यात्मक समीक्षा है; इसलिए इसके निष्कर्ष संभावित नीति मार्ग दर्शाते हैं, न कि किसी विशेष गंतव्य में सिद्ध कारणात्मक प्रभाव।

संदर्भ सूची :

- Boo, E. (1990). Ecotourism: The potentials and pitfalls (Vols. 1–2). World Wildlife Fund.
- Ceballos-Lascuráin, H. (1996). Tourism, ecotourism, and protected areas. IUCN.

- Eagles, P. F. J., McCool, S. F., & Haynes, C. D. (2002). Sustainable tourism in protected areas: Guidelines for planning and management. IUCN.
- Fennell, D. A. (2008). Ecotourism (3rd ed.). Routledge.
- Goodwin, H. (2011). Taking responsibility for tourism. Goodfellow Publishers.
- Honey, M. (2008). Ecotourism and sustainable development: Who owns paradise? (2nd ed.). Island Press.
- Lindberg, K., & Hawkins, D. E. (Eds.). (1993). Ecotourism: A guide for planners and managers (Vol. 1). The Ecotourism Society.
- Scheyvens, R. (1999). Ecotourism and the empowerment of local communities. Tourism Management, 20(2), 245–249. https://doi.org/10.1016/S0261-5177(98)00069-7
- United Nations Environment Programme. (2002). Ecotourism: Principles, practices and policies for sustainability. https://wedocs.unep.org/handle/20.500.11822/9045
- United Nations Environment Programme, & World Tourism Organization. (2005). Making tourism more sustainable: A guide for policy makers. https://wedocs.unep.org/handle/20.500.11822/8741
- Weaver, D. (2001). The encyclopedia of ecotourism. CABI Publishing.
- World Tourism Organization. (2004). Indicators of sustainable development for tourism destinations: A guidebook. UNWTO.
- World Tourism Organization. (2021). Report of the Secretary-General on current trends in international tourism. https://webunwto.s3.eu-west-1.amazonaws.com/s3fs-public/2021-08/A24_4_Report_current_trends_En_1.pdf
- भारत सरकार, वित्त मंत्रालय. (2021). आर्थिक सर्वेक्षण 2020–21. भारत सरकार. https://www.indiabudget.gov.in/economicsurvey/
- भारत सरकार, पर्यटन मंत्रालय. (2021). India tourism statistics 2021. https://tourism.gov.in/
- भारत सरकार. (1972). वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972. भारत सरकार.

- भारत सरकार. (1980). वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980. भारत सरकार.
- भारत सरकार. (1986). पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986. भारत सरकार.
- भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय. (2006). राष्ट्रीय पर्यावरण नीति, 2006. भारत सरकार.
- भारत सरकार, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय. (2011). Guidelines for ecotourism in and around protected areas. भारत सरकार.

THE RESEARCH DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-2, July 2022
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-Jully-2022/27

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

Prof. V.CH.N.K. Srinivasa Rao

For publication of book review title

"सतत पर्यटन विकास में ईको-टूरिज्म की भूमिका: पर्यावरण संरक्षण, स्थानीय समुदाय की सहभागिता एवं आर्थिक संभावनाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-02, Month July, Year-2022.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com